बीज एक दिन पेड़ बनेगा

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक

बीज एक दिन पेड़ बनेगा

ईव, चित्र : रोनाल्ड, हिंदी : विदूषक

दोपहर के बाद जब कभी मौसम अच्छा होता तो मैं, माँ और हमारा कुत्ता सिनको, मैदान पार करके अपने बाँझ के पेड़ के नीचे जाकर आराम करते थे. पिताजी के अनुसार वो पेड़ बहुत पुराना था – जब कोलंबस अमरीका आया था, शायद उस ज़माने का. माँ अपने साथ में नीबू का शरबत लातीं और छोटे-छोटे खट्टे सेब भी. फिर मैं अपने संग्रह के लिए बाँझ के बीज इकट्ठे करती. हम सिनको के लिए हमेशा बिस्कुट लाते और पढ़ने के लिए एक किताब भी.

“एक ज़माने में, दूर-दराज़ के एक शहर में...”
माँ ने पढ़ना शुरू किया.

सिनको भी अपने पंजों के बल लेटा और सुनता रहा.

फिर माँ और मैंने एक-दूसरे को कहानियां सुनाईं.

“मुझे वो कहानी सुनाओ. जब मेरे जन्म से पहले आप और पिताजी इस पेड़ के नीचे पिकनिक मनाने आए थे. तब आपने वो ज़मीन देखी थी और “घर बिकाऊ” वाली तख्ती भी देखी थी.” फिर मैं साँस लेने के लिए रुकती हूँ.

“क्योंकि हम शहर में रहते-रहते तंग आ गए थे इसलिए हमने इसे खरीद लिया.” माँ ने कहा.

“आपने इसी पेड़ के नीचे मेरा नामकरण किया, ज़रा उसके बारे में बताएं,” मैंने पूछा. “तब मिसेज़ मिक्लेअर ने असली फूलों की हैट पहनी थी जिसकी ओर मधुमक्खियाँ आकर्षित हो रही थीं.”

फिर हम हँसते हुए घास में लुढ़के.
सिनको भी यही किया.

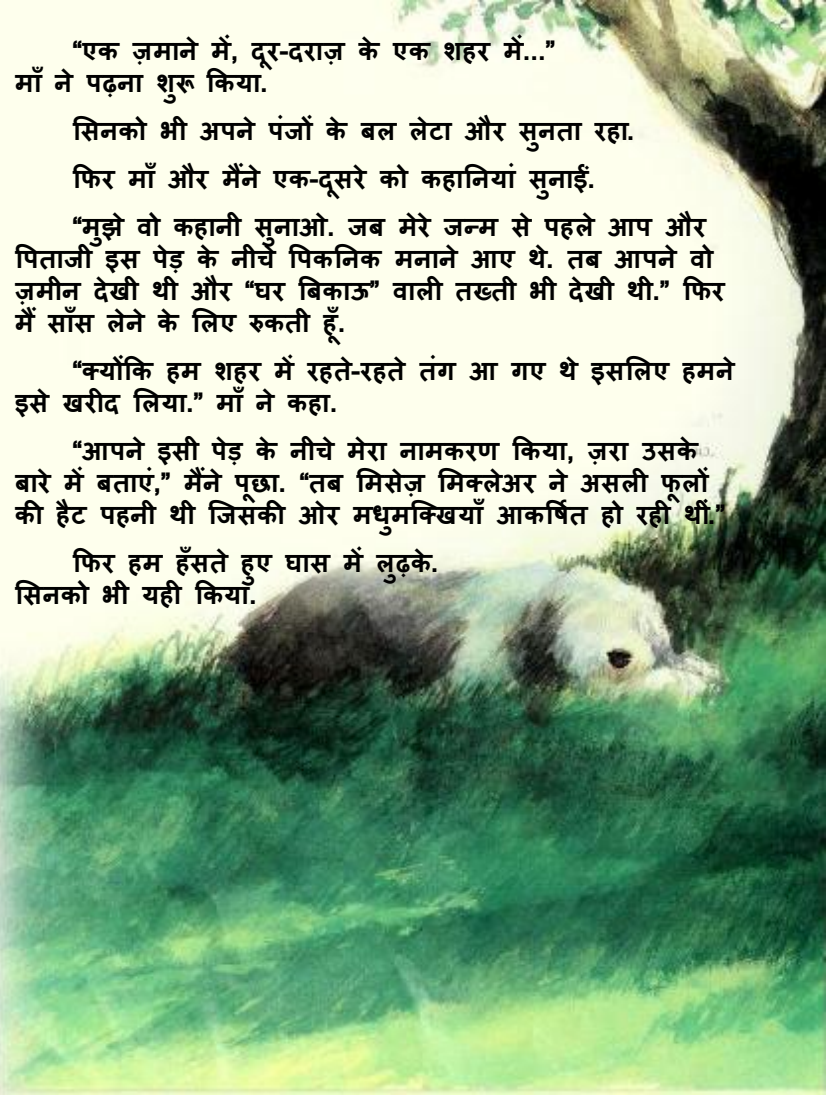

गर्मी के दिनों में शहर से आते लोग हुए अक्सर इसी स्थान पर पिकनिक मनाने के लिए रुकते थे, बिल्कुल जैसे माँ ओर पिताजी ने किया था. “यह तो अच्छी बात है,” पिताजी ने कहा. “यह पेड़ हमारा नहीं है. पेड़ का मालिक कोई नहीं हो सकता है.” कुछ लोग कम्बल बिछाकर वहां लेटे हैं ओर हमारी कहानियाँ नहीं सुनने का नाटक कर रहे हैं. पर कभी-कभी हम उन्हें, मुस्कुराते हुए भी देखते हैं.

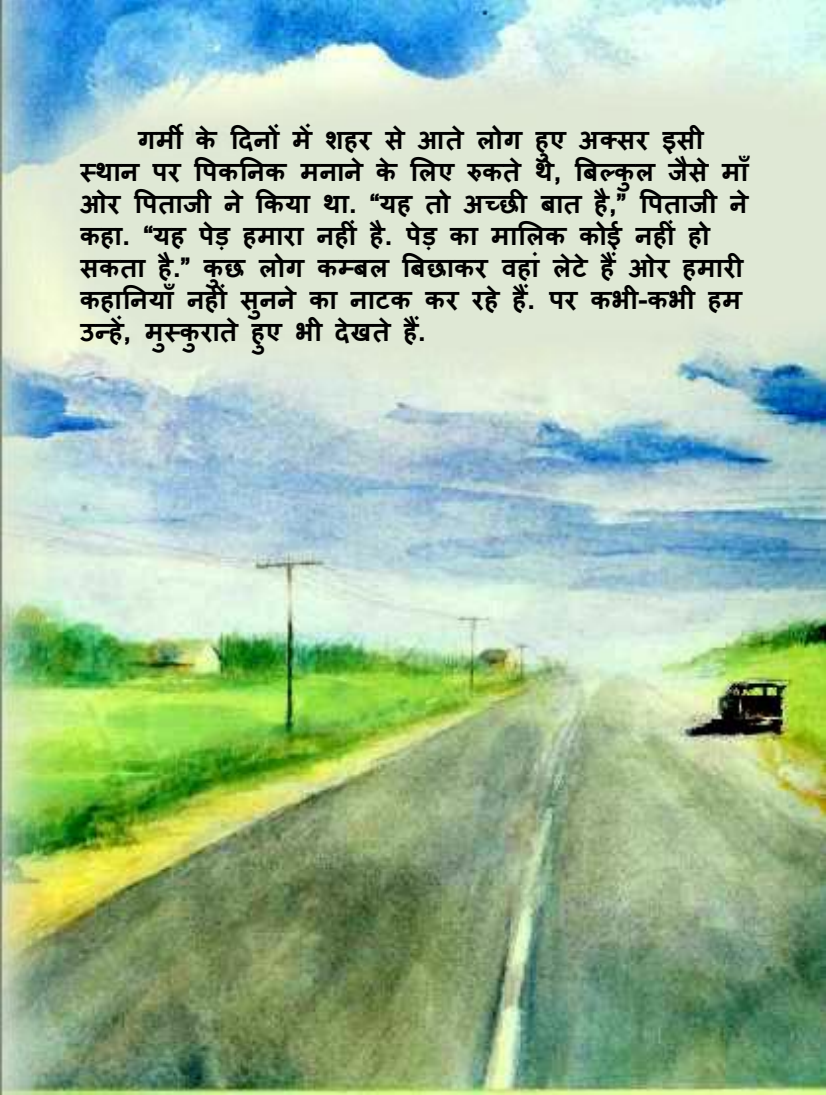

आज मैं अपनी मनपसंद चीज़ कर रही हूँ. मैं बाँझ के पेड़ की छाँव में लेटी हूँ ओर उसकी पत्तियों को घूर रही हूँ. माँ और सिनको मेरे पास ही सो रहे हैं. धुएं की तरह बादलों का आकार भी बदलता रहता है और पत्तियाँ गुज़रते बादलों के कानों में कुछ फुसफुसाती हैं. मैं उन्हें अपना नाम फुसफुसाते हुए सुनती हूँ.

"ऐलिस...

"ऐलिस..."

मेरे सिर के ऊपर एक मकड़ी अपने जाल से झूल रही है. पेड़ के कोटर में एक उल्लू रहता है. कभी-कभी शाम ढलते समय हमें उसकी आवाज़ ओर परछाई दिखती है.

फिर मैं अपने पेट के बल लेटती हूँ ओर अपने मुंह को घास में छिपाती हूँ. घास की खुशबू इतनी अजीब क्यों है? मैं सूंघती हूँ.

“माँ!” मैं उठकर बैठती हूँ, “माँ!”

माँ अपनी आँखें खोलती हैं.

“घास में यह अजीब सी खुशबू क्यों आ रही है?” मैंने पूछा. “और घास का रंग पीला क्यों पड़ रहा है?”

माँ ने जम्भाई ली. “इतनी गर्मी पड़ रही है, शायद इसीलिए होगा.”

हम पिताजी को बुलाते हैं. “आज रात को बारिश की सम्भावना है,” उन्होंने कहा. “शायद घास को बारिश की सख्त ज़रुरत हो.”

पर बारिश से कोई फायदा नहीं हुआ.

हर रोज़ घास ओर ज्यादा पीली पड़ती है. पेड़ के पास की घास भी मुरझाती है.

हम पेड़ की पत्तियों को गौर से देखते हैं. पत्तियां सूखी ओर सुस्त लग रही हैं और वे हमारे आसपास गिर रही हैं. अभी तो वसंत है, फिर भी पत्तियां गिर रही हैं?

फिर माँ पेड़ के तने को छूती हैं, जैसे बुखार की जांच कर रही हों.

पिताजी घास पर अपने पैर पटकते हैं.

“ऐसा लगता है जैसे कुछ चीज़ गिरी हो,” उन्होंने कहा. “हमें किसी पेड़ों के डॉक्टर को बुलाना चाहिए.”

पेड़ों के डॉक्टर ने कुछ गिरी पत्तियों को मसलकर देखा ओर फिर पेड़ के तने के पास से मिट्टी के नमूने इकट्ठे किए.

“पेड़ बहुत बीमार है!” उसने फुसफुसाया.

उन्होंने मेरे गाल को छूकर कहा, “मुझे कुछ टेस्ट करने पड़ेंगे, तभी मैं किसी पक्के नतीजे पर पहुंचूंगी. तुम तब तक अच्छी बातें ही सोचो.”

चार दिनों बाद हमें पता चला कि किसी ने हमारे पेड़ को ज़हर दे दिया था.

“पर भला कोई ऐसा क्यों करेगा?” माँ दुखी होकर चिल्लाईं.

पिताजी ने गंभीर भाव से कहा, “शायद किसी ने वहां कुछ केमिकल डाले हों, जो उसे नहीं डालने चाहिए थे. शायद उन्हें सड़क से लाकर यहाँ पटकना ज्यादा फायदेमंद ओर आसान था.”

मुझे केमिकल्स के बारे में कुछ नहीं पता. पर मुझे इतना पता है कि जो हुआ वो गलत हुआ.

पेड़ के बीमार होने की खबर जल्दी ही फैली. अखबार में भी बीमार पेड़ का चित्र छपा.

जब माँ और पिताजी पेड़ के तने के पास की ज़हरीली मिट्टी को खोदकर हटाने लगे तो मिक्लेअर परिवार भी उसमें हाथ बंटाने आया. वो अपने साथ फावड़े लेकर आए. उन्होंने ख़राब मिट्टी हटाई ओर वहां अच्छी मिट्टी भरी. हमने उनसे यह करने को नहीं कहा था.

फायर-ब्रिगेड ने अपनी गाड़ी भेजी ओर बाँझ के पेड़ के पत्तों पर पानी का छिड़काव किया. पर अब पेड़ की ऊपरी टहनियां नंगी हो चुकी थीं. फिर पिताजी मिस्टर मिक्लेअर ओर मिस्टर रोडरीग्स ने पेड़ पर चढ़कर उन नंगी शाखों पर पुराने बोरे बांधे जिससे उनपर सीधी धूप नहीं पड़े.

मिसेज़ जैक्सन टेलीफोन कम्पनी के लिए काम करती थीं. वो कम्पनी से ऊंचे-ऊंचे बांस मांग कर लाईं और उन्होंने पेड़ के चारों ओर एक जालीदार पर्दा लगाया, जिससे हमारा पेड़ हमेशा छाँव में रहे.

सब लोग यही उम्मीद लगाए हैं कि पेड़ ठीक हो जाए.

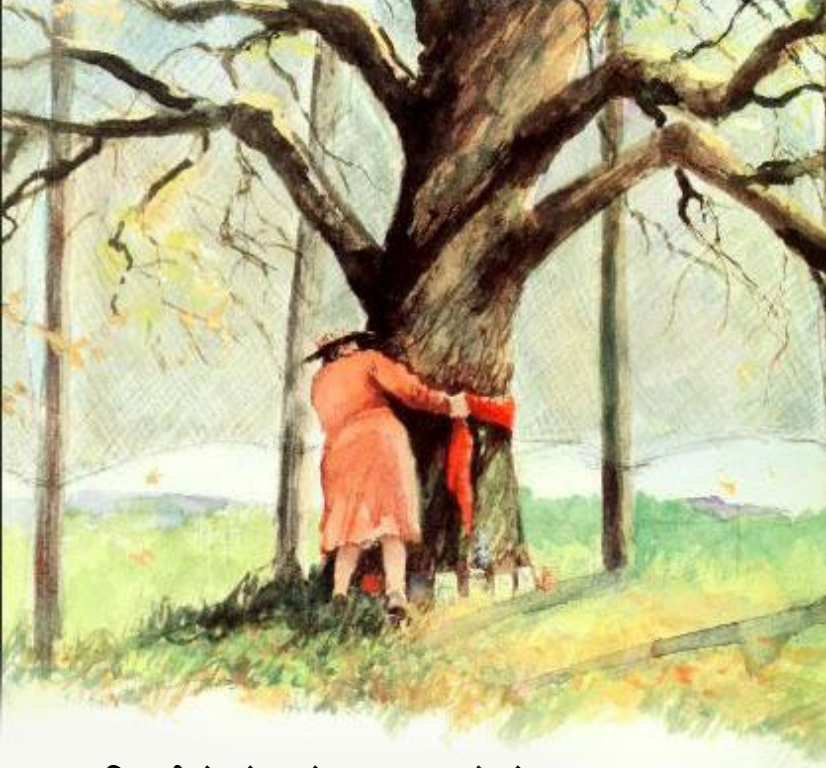

फिर भी पेड़ के पत्ते लगातार झड़ते रहे.

“बारिश की वजह से मिट्टी ने ज़हर को सोख लिया है,” पेड़ों के डॉक्टर ने कहा. “मुझे लगता है कि अब पेड़ में लड़ने की शक्ति नहीं बची है.”

एक महिला ने अपने हाथों से लाल रंग का एक मफलर बुना. वो कूदने वाली रस्सी जितना लम्बा था. उन्होंने उस मफलर को पेड़ के तने के चारों ओर लपेटा और उसे प्यार से थपथपाया.

“देखो,” उन्होंने कहा. “इससे पेड़ को गर्मी मिलेगी.”

लोगों ने पेड़ की बहाली के लिए सन्देश लिखे.

दिल के आकार का एक गुब्बारा पेड़ की एक टहनी से तैर रहा था.

कुछ लोग पेड़ के ठीक होने के लिए फूल और अपने प्रिय भोजन भी लाए.

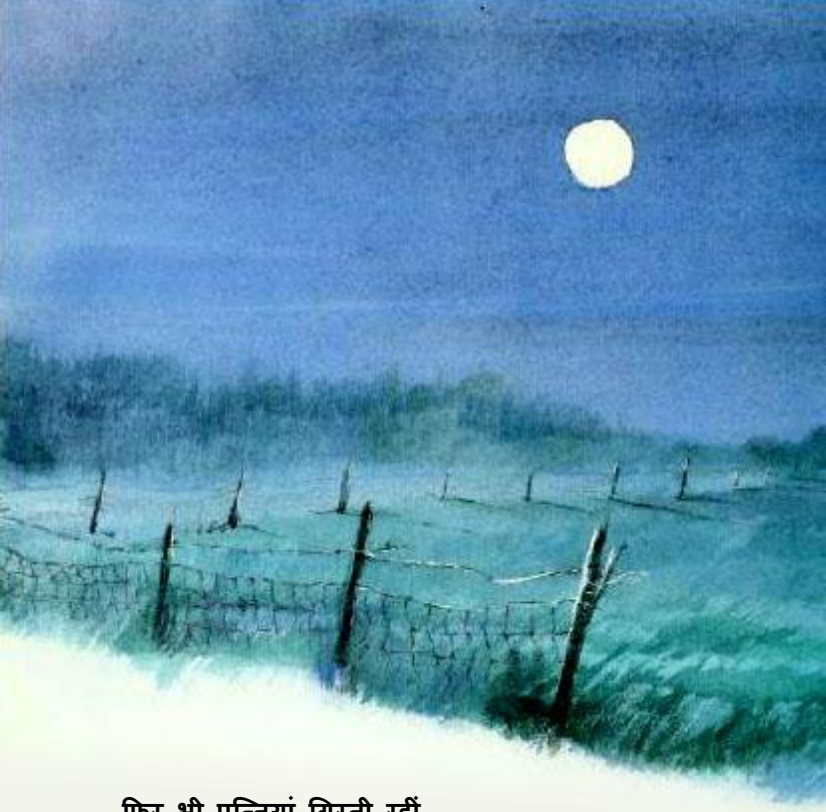

फिर भी पत्तियां गिरती रहीं.

सारी चिड़िये उड़ गईं. गिलहरी भी चली गई. पहले रात के समय, चुपके-चुपके हिरण अपने रहस्यमयी स्थानों से वहां आते थे. अब उन्होंने आना बंद कर दिया था. इसलिए शाम के समय पेड़ के आसपास एकदम चुप्पी रहती थी.

"क्या हमारा पेड़ मर रहा है?" मैंने पिताजी से पूछा. "क्या इसीलिए पेड़ पर अब चिड़िये और जानवर नहीं आते हैं?"

“आसपास के शोर ने सभी जानवरों और चिड़ियों को भगा दिया है,” पिताजी ने मेरा दिल बहलाने के लिए कहा.

मैं पिताजी की बात पर यकीन करना चाहती हूँ, पर मुझे डर लगता है. अब सिनको भी पेड़ के पास नहीं फटकता है. हर रात को मैं अपने घर की खिड़की से, हिरणों के आने की राह देखती हूँ. क्या वो आयेंगे? पर वे नहीं आते.

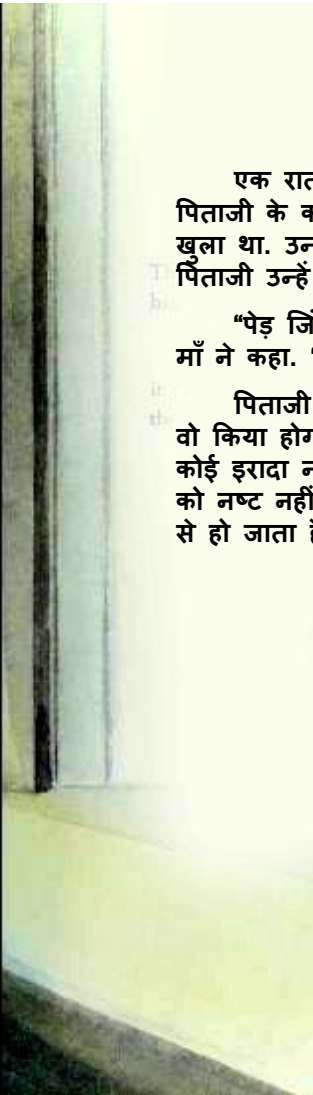

एक रात मैं इतनी दुखी होती हूँ कि मैं माँ और पिताजी के कमरे में चली जाती हूँ. उनका दरवाज़ा खुला था. उन्होंने मुझे देखा नहीं. मेरी माँ रो रही थीं. पिताजी उन्हें सांत्वना दे रहे थे.

“पेड़ जिंदा रहते हैं ओर वे मरते भी हैं,” माँ ने कहा. “पर इस तरह से नहीं.”

पिताजी ने माँ के बाल सहलाए. “जिस इंसान ने वो किया होगा, असल में पेड़ को मारने का उसका कोई इरादा नहीं होगा. कोई भी दुनिया की सुन्दरता को नष्ट नहीं करना चाहता है. कभी-कभी ऐसा गलती से हो जाता है.”

फिर मैं चुपके से अपने कमरे में जाकर लेट गई. मेरा सीना दुखने लगा. मुझे लगता था कि हमारा पेड़ हमेशा रहेगा - आसमान जैसे, खेतों जैसे, मेरे माँ ओर पिता जैसे. पर ऐसा सोचना, मेरी गलती थी.

चाँद मेरे कमरे में अपना प्रकाश फेंक रहा था. मुझे मेज़ पर बाँझ के पेड़ के बीजों का अपना संग्रह दिखाई दिया. उनमें से कुछ बीज पुराने थे, पर कुछ को तो मैंने हाल में ही इकट्ठा किया था. तब पेड़ अच्छी सेहत में था. बीजों को देखकर मैं इतनी खुश हई कि मुझे सांस लेना मुश्किल हो गया.

फिर मैं अपने पलंग से उठी और मैंने बीजों की ढेरी में से ऊपर वाले बीज अपने हाथ में उठाए – उनका दिल धड़क रहा था, वे जीवन से स्पंदन कर रहे थे. फिर मैं दौड़कर खिड़की के पास गई. पर बाहर अभी भी अँधेरा था और चन्द्रमा बादलों के पीछे छिपा था. बाहर के अँधेरे से मुझे अब भी डर लगता था.

फिर मैं उन बीजों को अपनी मुट्ठी में लेकर सो गई. जब मैं सुबह उठी तो बीज तभी भी मेरी मुट्ठी में थे और वे गर्म पसीने से भीग गए थे.

मैं नंगे पैरों नीचे दौड़ी-दौड़ी आई.

सिनको बाहर बरामदे में था. उसने नींद से अपना सर उठाया. मैंने माँ का फावड़ा उठाया ओर बाहर मैदान की ओर दौड़ी. सिनको भी मेरे पीछे-पीछे आया.

उस रात फिर बारिश आई थी. हवा में बारिश की सोंधी खुशबू अभी भी मौजूद थी. घास के कुछ तिनके मेरे पजामे से चिपक गए.

बाँझ के पेड़ से गिरी पत्तियों को ढेरियों में इकट्ठा किया गया था. पर उस रात भी खूब पत्तियां झड़ी थीं. जब मैं उनपर चल रही थी तो पत्तियों से आवाज़ आ रही थी. उनको सुनकर सिनको सावधान हुआ.

ऐसा लगा जैसे पेड़ सिकुड़ गया हो. ऊपर की टहनियों पर बंधे कपड़े ओर बोरे अब चिथड़े हो गए थे. लाल मफलर भी ढीला होकर लटक रहा था. मिसेज़ जैक्सन पिछले हफ्ते बांस वापिस ले गई थीं.

पेड़ ने अब जवाब दे दिया था. हम भी हिम्मत हार चुके थे.

मैंने बाँझ के बीजों को अपनी हथेली में पकड़ा.

“मुझे पता नहीं, पेड़,” मैंने कहा. “पर हो सकता है....”

फिर सिनको के साथ मैं पेड़ से काफी दूर गई जहाँ ज़मीन स्वस्थ्य थी. वहां मैंने छोटा गड्ढा खोदा. उसमें एक-एक करके मैंने सभी बाँझ के बीज डाले. फिर मैंने उन्हें मिट्टी से ढंका.

“तुम यहाँ वापिस आकर खुदाई मत करना,” मैंने सिनको को समझाया. “अगर उनमें से एक बीज ने भी जड़ पकड़ी तो फिर एक दिन वहां पर एक विशाल बाँझ का पेड़ होगा.” उसके बाद मैंने अपने दोनों हाथों को फैलाया.

सिनको ने अपना सर हिलाया.

“यह कब होगा, मुझे पता नहीं,” मैंने कहा. “शायद एक दिन.”

फिर मैं पेड़ के पास कुछ समय के लिए रुकी और मैंने उसके तने पर दुबारा से मफलर बाँधा.

बड़ी अजीब सी बात है. पेड़ पर अब एक भी पत्ती नहीं बची थी. जब सिनको और मैं दौड़कर घर वापिस जा रहे थे तो मुझे कुछ पीछे से किसी के फुसफुसाने की आवाज़ सुनाई दी.

“ऐलिस....

“ऐलिस....”